भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर(2024-25)

कक्षा-10	DEPT: **हिंदी**	**Date – 17-05-2024**
Work Sheet-4(ii)	**व्याकरण (समास) – उत्तर**	**Note: Pl. file in portfolio**

नाम: _____अनुभाग: _____अनुक्रमांक: _____दिनांक: _____

प्रश्न -१ – विग्रह करके समास का नाम लिखिए :-

चंद्रमौलि – चंद्र है मौलि पर जिसके (शिव) – बहुव्रीहि समास

भीमार्जुन – भीम और अर्जुन – द्वंद्व समास

विद्याधन – विद्या रूपी धन – कर्मधारय समास

भरपेट – पेट भर कर – अव्ययीभाव समास

कांतिहीन – कांति से हीन – अपादान तत्पुरुष समास

दुरुपयोग – दुर् (बुरा) है जो उपयोग – कर्मधारय समास

चौमासा – चार मासों का समाहार – द्विगु समास

आमरण – मरण तक – अव्ययीभाव समास

हथकड़ी – हाथों के लिए कड़ी – संप्रदान तत्पुरुष

अधपका – आधा है जो पका – कर्मधारय समास

धनुर्बाण – धनुष और बाण – द्वंद्व समास

मृगेंद्र – मृगों का राजा है जो अर्थात् सिंह – बहुव्रीहि समास

यथाविधि – विधि के अनुसार – अव्ययीभाव समास

त्रिलोक – तीन लोकों का समाहार – द्विगु समास

रातोंरात – रात ही रात में – अव्ययीभाव समास

दो-चार – दो या चार – द्वंद्व समास

पंचतत्व – पाँच तत्वों का समाहार – द्विगु समास

कमलनयन – कमल के समान नयन – कर्मधारय समास

रसोईघर – रसोई के लिए घर – संप्रदान तत्पुरुष

वीणापाणि – वीणा है पाणि (हाथ) में जिसके अर्थात् देवी सरस्वती – बहुव्रीहि समास

ग्रंथरत्न – ग्रन्थ रूपी रत्न – कर्मधारय समास

आशुतोष – आशु (शीघ्र) संतुष्ट हो जाता है जो अर्थात् शिवजी – बहुव्रीहि समास

सूक्ष्माणु – सूक्ष्म है जो अणु – कर्मधारय समास

गृहप्रवेश – गृह में प्रवेश – अधिकरण तत्पुरुष

अठन्नी – आठ आनों का समाहार – द्विगु समास

यथाशक्ति – शक्ति के अनुसार – अव्ययीभाव समास

हाथ-पाँव – हाथ और पाँव – द्वंद्व समास

सुलोचना – सुंदर हैं लोचन जिसके (स्त्री विशेष) बहुव्रीहि समास

मुँहमाँगा – मुँह से माँगा – अपादान तत्पुरुष समास

गुल्ली-डंडा – गुल्ली और डंडा – द्वंद्व समास

हँसमुख – हँसता हुआ है जो मुख – कर्मधारय समास

दोराहा – दो राहों का समूह – द्विगु समास

पद्मासना – पद्म (कमल) आसन है जिसका अर्थात् देवी सरस्वती – बहुव्रीहि समास

यथाकाल – काल के अनुसार – अव्ययीभाव समास

वृकोदर – वृक के समान उदर है जिसका अर्थात् भीम – बहुव्रीहि समास

जपमाला – जप के लिए माला – संप्रदान तत्पुरुष समास

प्रश्न – २ – समस्त-पद बनाकर समास का नाम लिखिए :-

देव और असुर – देवासुर – द्वंद्व समास

लोक की कथा – लोककथा – संबंध तत्पुरुष

तीन देवों का समूह – त्रिदेव – द्विगु समास

गिरि को धारण करने वाला – गिरिधर – बहुव्रीहि समास

लगाम के बिना – बेलगाम – अव्ययीभाव समास

वचन रूपी अमृत – वचनामृत – कर्मधारय समास

धर्म और अधर्म – धर्माधर्म – द्वंद्व समास

तीन हैं लोचन जिनके – त्रिलोचन – बहुव्रीहि समास

विदेश को गया – विदेशगत – कर्म तत्पुरुष समास

मति के अनुसार – यथामति – अव्ययीभाव समास

नौ रत्नों का समाहार – नवरत्न – द्विगु समास

परम है जो आनंद – परमानंद – कर्मधारय समास

हर एक द्वार – द्वार-द्वार – अव्ययीभाव समास

सूर द्वारा रचित – सूररचित – करण तत्पुरुष

हवन के लिए सामग्री – हवनसामग्री – संप्रदान तत्पुरुष

कर रूपी कमल – करकमल – कर्मधारय समास

पर के अधीन – पराधीन – संबंध तत्पुरुष

चार भुजाओं का समूह – चतुर्भुज – द्विगु समास

भला या बुरा – भला-बुरा – द्वंद्व समास

दूसरों का उपकार – परोपकार – संबंध तत्पुरुष

नीला है जो नभ – नीलनभ – कर्मधारय समास

सौ वर्षों का समाहार – शताब्दी – द्विगु समास

वज्र के समान देह – वज्रदेह – कर्मधारय समास

चिंता में मग्न – चिंतामग्न – अधिकरण तत्पुरुष समास

नाम के अनुसार – यथानाम – अव्ययीभाव समास

जय और पराजय – जय-पराजय – द्वंद्व समास